ISSN : 2582-1792 (P)

IMPACT 2020 5.56 SJIF FACTOR

शोध समागम®

A DOUBLE-BLIND, PEER-REVIEWED QUARTERLY
MULTI DISCIPLINARY AND BILINGUAL RESEARCH JOURNAL

SHODH SAMAGAM

A Double - Blind, Peer-Reviewed, Quarterly,
Multidisciplinary and Multilingual Research Journal

Special Issue for Webinar

गांधी, शास्त्री का भारत और हम
(शिक्षा, राजनीति, स्वावलंबन और मीडिया के संदर्भ में)
(2, 3 अक्टूबर 2020)

आयोजक

आचार्यकुल, भारत, केंद्रीय हिंदी संस्थान, एम आई टी, विश्विद्यालय पुणे और अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में

Aditi Publication
Raipur, Chhattisgarh
www.shodhsamagam.com

आयोजन समिति अंतर्राष्ट्रीय वेबीनार

संरक्षक

प्रो. रामदेव भारद्वाज, कुलपति, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्विद्यालय, भोपाल

प्रो. पुष्पिता अवस्थी, वैश्विक लेखिका, अध्यक्ष आचार्यकुल, भारत

डॉ. अनिल शर्मा, उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली

प्रो. बीना शर्मा, निदेशक केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

विशेषांक संपादक

डॉ. सन्दीप अवस्थी
अध्यक्ष, भारतीय विद्या अध्ययन केंद्र,
उपाध्यक्ष आचार्यकुल भारत
हिंदी यूनिवर्स फाउंडेशन, नीदरलैंड

विशेषांक सह–सपांदक

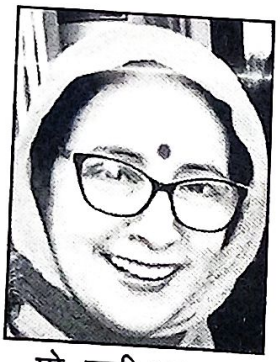

प्रो. जूही शुक्ल,
अध्यक्ष, कला विभाग,
प्रयागराज

डॉ. प्रिया शर्मा,
हिंदी विभाग,
केंद्रीय विश्वविद्यालय,
धर्मशाला

डॉ. मो. मजिद मियाँ,
हिंदी विभाग,
पश्चिम बंगाल
सिलीगुड़ी,

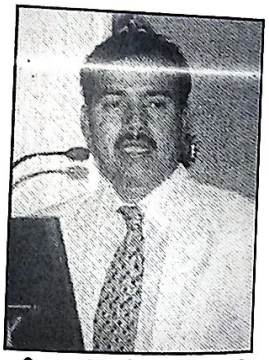

श्री अखिलेश त्रिपाठी,
व्याख्याता,
बस्तर विश्वविद्यालय,
जगदलपुर

SHODH SAMAGAM ISSN : 2582-1792 (Print)

CONTENTS

SN.	Particular/Author name	P.N.
1.	नई शिक्षा नीति 2020 **प्रो. रामदेव भारद्वाज,** कुलपति अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश	1–5
2.	गाँधी और महिलाएँ सुविख्यात **मृदुला सिन्हा** जी का अंतिम लेख। हम उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि देते है। **संदीप अवस्थी**	6–8
3.	रामधारी सिंह दिनकर : समग्रतः **प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित,** लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ	9–13
4.	मोहनदास के विविध आयाम : एक विवेचन **डॉ. सन्दीप अवस्थी,** शिक्षाविद्, आलोचक, अध्यक्ष, भारतीय विद्या, अध्ययन केंद्र, राजस्थान	14–18
5.	बस्तर की बोली भाषाएँः एक संक्षिप्त अध्ययन **अखिलेश कुमार त्रिपाठी,** व्याख्याता, शोधार्थी, बस्तर विश्वविद्यालय, जगदलपुर	19–23
6.	भारतीय शिक्षा प्रणाली पर महात्मा गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता **ऋतु बरनवाल,** आसनसोल, पश्चिमबंगाल	24–25
7.	स्वामी विवेकानन्द : एक शिक्षाविद् **डॉ. लता चन्दोला,** आगरा, उत्तरप्रदेश	26–31
8.	शिक्षा और संस्कृति के पुरोधा – ''स्वामी विवेकानन्द'' **राजश्री रतावा,** अजमेर, राजस्थान	32–34
9.	शोध की आवश्यकता : नई शिक्षा नीति **रजनी,** जोधपुर, राजस्थान	35–38
10.	आधी आबादी के अग्रदूत गाँधी (प्रवासी लेखिकाओं के कथा साहित्य के संदर्भ में) **चंचल मेहरा,** अजमेर, राजस्थान	39–42
11.	हजारीप्रसाद द्विवेदी और रवींद्रनाथ ठाकुर के उपन्यासों में संस्कृति और मानवीयता का सामंजस्य **प्रियंका गुप्ता,** मिदनापुर, पश्चिम बंगाल	43–46
12.	हिन्दी कविता और गाँधी **प्रो. स्मृति शुक्ल,** जबलपुर, मध्यप्रदेश	47–49
13.	नासिरा शर्मा की सामाजिक दृष्टि पर गाँधीवाद का प्रभाव **सन्तरा मीणा उर्फ सन्तरा कुमारी मीणा,** अजमेर, राजस्थान	50–52
14.	युग पुरुष गांधी और विवेकानंद की धर्म साधना **डॉ. प्रिया शर्मा,** धौलाधार, हिमाचल प्रदेश	53–58
15.	मीराँ के साहित्य में मुक्ति का स्वर **प्रतिमा खटुमरा,** ब्यावर	59–61
16.	दुक्खम सुक्खम के बहाने गांधीवाद की पड़ताल **अनीता कुमारी ठाकुर,** कोलकाता	62–65

युग पुरुष गांधी और विवेकानंद की धर्म साधना

डॉ. प्रिया शर्मा, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
केंद्रीय विश्वविद्यालय, शैक्षणिक खंड, धौलाधार परिसर–1, हिमाचल प्रदेश

उदात्त आदर्श की प्राप्ति के उद्देश्य से किया गया सात्त्विक कर्म साधना के अन्तर्गत समाविष्ट है। निरंतर अध्ययनरत रहकर लक्ष्य सिद्धि की दिशा की ओर अग्रसर रहना विद्यार्थी की साधना है। धर्माचरण के लिए शारीरिक और मानसिक स्तर पर कष्ट सहना और आत्म–परिष्कार करना भी साधना का ही रूप है। रामचरितमानस में पार्वती शिव को पति–रूप में पाने के लिए तपस्या करती दिखाई गई हैं। राम अनेक कठिनाइयों के मध्य गुजरते हुए पुनीत लक्ष्यों की सिद्धि की दिशा में अग्रसर होते हैं। राम की जीवन–यात्रा एक साधक की सच्ची साधनावस्था है, जिसमें धर्म और आचरण का स्वरूप प्रकट होता है। युग पुरूष गांधी और विवेकानंद की भी ठीक इसी प्रकार का अर्थ लिया जा सकता है। योग साधना में शारीरिक और मानसिक परिष्कार ही लक्ष्य रहता है। 'योगश्चित्त वृत्तिनिरोधः' के अनुसार चित्तवृत्तियों को नियमित करके किसी उदात्त लक्ष्य पर केंद्रित करना ही साधक का साध्य होता है।

श्रीमद्भगवद्गीता' में ब्रह्मचर्य, अहिंसा, पवित्रता और गुरु सेवा को शारीरिक तप माना गया है।[1] साधना के अर्थ को और स्पष्ट करते हुए मन के निग्रह को ही मानसिक तपस्या या साधना स्वीकार किया गया है।[2] शब्दकोष के अनुसार साधना का अर्थ इस प्रकार है – 'कोई कार्य सिद्ध करना, मंत्रसिद्धि के लिए उपासना करना, शुद्ध करना, वश में करना'।[3] युग पुरूष गांधी और विवेकानंद की धर्म साधना जीवन की उर्ध्वगति का प्रयास है। दोनों पवित्र हृदय हैं, संन्यासी हैं, महात्मा हैं और हमारी श्रद्धा के पात्र हैं। देश–दुनिया के साधारण व्यक्ति को सत्य जीवन से दोनों ने अवगत कराया है, लोगों के मन और आत्मा को पवित्र किया है। प्रेम, दया, विनम्रता और सहानुभूति की अनुभूति की एक साथ पहचान एक शब्द 'अहिंसा' द्वारा होती है। यही कारण है कि विश्व के सभी धर्मों में अहिंसा का अपना विशिष्ट महत्त्व है। सर्वभूत–हित की बुद्धि से किया गया कार्य धर्म कहलाता है और अहिंसा को धर्म इसलिए माना गया है क्योंकि इससे प्राणिमात्र का कल्याण होता है। तुलसी ने अहिंसा को इसी रूप में स्वीकार किया है :

'परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा'[4]

अपनी आध्यात्मिक प्रतिभा, साधना और तपस्या के बल पर स्वामी विवेकानंद ने सारे पश्चिम को आध्यात्मिक रूप से विजय कर लिया था। अंग्रेज अपनी कूटनीति के कारण भले ही भारत पर शासन कर रहे थे परंतु जब भारत का संन्यासी इंग्लैंड गया, तो उसके ज्ञान के आगे सारा इंग्लैंड नतमस्तक हो गया। जिस उद्देश्य को लेकर स्वामी जी अमेरिका गए, वह आधा ही पूरा हो पाया था। पश्चिमी देशों में भारत के बारे में सब भ्रांतियां ही नहीं मिटीं, अपितु सारे पश्चिम पर भारतीय वेदांत की पताका लहराने में उन्हें अपूर्व सफलता मिली थी। स्वार्थ में फंसा पश्चिम उसके करोड़ों भूखे देशवासियों के लिए कुछ करने के लिए आगे न बढ़ सका। वे यह आशा लेकर गए थे कि विज्ञान में महान उन्नति प्राप्त करने के लिए कुछ सहायता प्राप्त कर सकेंगे। इस उद्देश्य में उन्हें निराशा हुई। यह उद्देश्य भले ही सफल न हुआ हो पर एक भारतीय संन्यासी अपने देशवासियों के दुःख में दुखी होकर कितनी बड़ी योजना सोचता है, यह बहुत महत्त्व की बात है। कई वर्षों के पश्चिम के अनुभव के बाद वे एक ही निर्णय पर पहुँचे थे कि भारत को अपने ही पांव पर खड़े होकर अपना देश संवारना होगा। उन्होंने कहना आरंभ कर दिया था – 'अब भारत ही केंद्र होगा'। वे अब भारत को केंद्र बनाकर ही मातृभूमि का उद्धार व उससे समस्त मानवता की सेवा करना चाहते थे। देशवासियों के सम्मुख बड़े स्पष्ट शब्दों में उन्होंने कहा – 'आने वाले पचास वर्षों के लिए जननी जन्मभूमि ही तुम्हारी आराध्य देवी बन जाए। उस समय तक अन्य देवी–देवताओं को अपने दिमाग से निकाल दो। अपना ध्यान इसी एक ईश्वर की ओर लगाओ। देश को जगाओ, जाति को जगाओ और इसी में उस परमब्रह्म को देखो। सबसे पहले ईश्वर के इस विराट स्वरूप की पूजा करो जिसे तुम चारों ओर देख रहे हो।'[5] विवेकानंद के ऊपर कहे वाक्यों से यह स्पष्ट होता है कि देश के लोग अपने व्यापक मानव धर्म और समाज धर्म का पालन